कुल मिलाकर 6,432 नमूनों में से 93% से अधिक (5,976) नमूने मानव उपभोग के लिए पूरी तरह सुरक्षित पाए गए। निंसदेह भारतीय उपभोक्ताओं के लिए यह एक अच्छी खबर है।

फिर भी सर्वे से यह पता लगा कि हालांकि लगभग 41% नमूने चाहे सुरक्षित थे, फिर भी वे गुणता संबंधी किसी न किसी मानदंड में असफल रहे। कच्चे और प्रसंस्कृत दोनों प्रकार के नमूने कम वसा अथवा कम एस.एन.एफ (वसारहित ठोस पदार्थ) अथवा दोनों की दृष्टि से अपालन करते पाए गए। दूध में वसा और वसारहित ठोस पदार्थ (एस.एन.एफ) के अनुपात में प्रजाति के अनुसार पर्याप्त अंतर हो जाता है और नस्ल के साथ-साथ आहार एवं चारे पर निर्भर करता है। दूध में वसा और एस.एन.एफ की मात्रा में सुधार लाने के लिए पशु को अच्छी तरह आहार देना और पशु-पालन की अच्छी रीतियाँ अपनानी होती हैं। कच्चे दूध में इन मानदंडों का अपालन इन कारणों से अथवा उसमें पानी मिलाने से हो सकता है। फिर भी मानकीकृत/प्रसंस्कृत दूध में वसा और एस.एन.एफ का अपालन आश्चर्यजनक है।

6,432 नमूनों में से 156 नमूनों में माल्टोडेक्स्ट्रिन और 78 में शर्करा की मौजूदगी एक और आश्चर्य है। ऐसा केवल प्रसंस्कृत दूध में देखने में आया। हालांकि माल्टोडेक्स्ट्रिन और शर्करा असुरक्षित नहीं होते, फिर भी ये वसा और एस.एन.एफ की मात्रा बढ़ाने के लिए डाले जाते हैं। यूँ इनसे मानव स्वास्थ्य को खतरा नहीं होता, फिर भी इस गलत आदत को समाप्त करने के लिए सख्त कार्रवाई की आवश्यकता है। सर्वे में इकट्ठे किए गए नमूनों में अन्य मानदंडों अर्थात् सेल्युलोज, ग्लुकोज, मांड और वनस्पति तेल से संबंधित कोई अपालन नहीं पाया गया।

यह दूध सर्वेक्षण सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में द्रव दूध की सुरक्षा और गुणता की मॉनिटरी करने के प्रयोजन से मई, 2018 से अक्टूबर, 2018 तक किया गया। 50,000 से अधिक की जनसंख्या वाले 1,103 कस्बों/शहरों से कुल 6,432 नमूने लिए गए, जो संगठित क्षेत्र (खुदरा विक्रेता और प्रसंस्कर्ता) तथा असंगठित क्षेत्र (स्थानीय डेयरी फार्म, दूध विक्रेता और दूध मंडी) दोनों से थे। लिए गए नमूने संबंधित स्थान की जनसंख्या के अनुसार थे और ये नमूने विभिन्न प्रकार के दूध (विभिन्न प्रकार के कच्चे और प्रसंस्कृत दूध) के थे।

जहाँ गुणता और सुरक्षा के महत्वपूर्ण मानदंडों के लिए सभी नमूनों का स्थल पर ही परीक्षण किया गया, संदूषकों और मिलावटों के कारण फेल नमूनों का पुष्टि विश्लेषण किया गया। यह विश्लेषण एन.ए.बी.एल-प्रत्यायित और एफ.एस.एस.ए.आई द्वारा मान्यता-प्रदत्त प्रयोगशालाओं में दक्ष विश्लेषकों द्वारा उच्च प्रौद्योगिकी वाले उपकरणों का प्रयोग करके और स्थापित परीक्षण न्यायाचारों के अनुसार किया गया। सर्वे तृतीय पक्ष की एक स्वतंत्र एजेंसी द्वारा किया गया। द्रव दूध की सुरक्षा और गुणता

के आकलन हेतु यह अपनी प्रकार का पहला व्यापक, सुसंकल्पित, प्रतिनिधिक और सर्वाधिक विशद सर्वे था।

सर्वे के परिणाम से एक मिथक टूटा। सर्वे के परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि भारत में बेचा जा रहा दूध अधिकांश रूप में मानव उपभोग के लिए सुरक्षित है। यह इस व्यापक धारणा के विपरीत है कि दूध में बड़े स्तर पर मिलावट होती है, जो कपटपूर्ण अभियानों और बिना किसी साक्ष्य वाली रिपोर्टों के आधार पर होता है। इसके अतिरिक्त एफ.एस.एस.ए.आई द्वारा पहले कराए गए दो प्रयोगिक सर्वेक्षणों से भी काफी भ्रांति पैदा की गई, जिससे उपभोक्ताओं के मन में अनावश्यक डर पैदा हुआ।

दूध की सुरक्षा और गुणता बनाए रखना आवश्यक है। एफ.एस.एस.ए.आई के सर्वे से यह बात स्पष्ट रूप से सामने आई है कि जहाँ दूध अधिकांश रूप से सुरक्षित है, एफ्लाटोक्सिन एम1 और प्रतिजैविकों के अवशिष्टों से इसका संदूषण दुग्ध अपमिश्रण की तुलना में अधिक गंभीर समस्या है और इसकी गुणता संबंधी मुद्दा अभी बना हुआ है। जहाँ मिलावट को खत्म करने के लिए ज्यादा सतर्क नागरिकों और प्रवर्तन मशीनरी की आवश्यकता है, दूध में संदूषण के लिए आपूर्ति श्रृंखला में रीतिबद्ध रूप से सुधार करने की आवश्यकता है और ऐसा किया जा रहा है।

अत: अब दूध के सेवन से जुड़ी भ्रांतियाँ समाप्त हो जानी चाहिए।

एफ.एस.एस.ए.आई के बारे में

भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफ.एस.एस.ए.आई) की स्थापना 2006 में उपभोक्ताओं को सुरक्षित और स्वास्थ्यकर खाद्य की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के प्रयोजन से की गई थी और प्राधिकरण इस उद्देश्य की पूति के लिए लगातार प्रयासरत है। इस प्रयोजन के लिए यह घरेलू विशिष्टियों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय खाद्य मानकों का कोडेक्स एलिमेंटेरियस कमिशन, जो नवीनतम विज्ञान पर आधारित खाद्य मानकों के निर्धारण के लिए अंतर्राष्ट्रीय रूप से मान्य संस्था है और जिसके मानक दूध की सुरक्षा सहित खाद्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त माने जाते हैं, के मानकों से लगातार सुमेलन करती रहती है। भारत में जन स्वास्थ्य को सुधारने और जीवन शैली से जुड़े रोगों से निपटने के प्रयोजन से नकारात्मक पोषण प्रवृत्तियों से जूझने के लिए एफ.एस.एस.ए.आई ने जुलाई, 2018 में 'ईट राइट अभियान' छेड़ा। दुध की सुरक्षा और गुणता के संबंध में एफ.एस.एस.ए.आई द्वारा कराया गया *'राष्ट्रीय दुग्ध सुरक्षा और गुणता सर्वेक्षण (एन.एम.एस.क्यू), 2018'* इसका हाल ही का कदम है।

अक्टूबर 18, 2019